राजद समाचार

आजादी, समानता और भाईचारा

राष्ट्रीय जनता दल का मासिक मुखपत्र

अंक–38 सितम्बर, 2024 सहयोग राशि–40 रुपये

इस बार

किशन पटनायक विशेषांक

किशन पटनायक : संक्षिप्त जीवन परिचय- रामनरेश यादव	03
किशन पटनायक : देशज वैचारिकी की तलाश- प्रकाश चंद्रायन	04
वैकल्पिक धारा के चिंतक- योगेन्द्र यादव	06
एक अनूठे समाजवादी नायक- आनंद कुमार	07
भारतीय राजनीति के पथप्रदर्शक- राम पुकार	10
व्यापक जनसरोकार को जीनेवाले नेता- अमरनाथ	11
सादगी और अपरिग्रह के प्रतिमान- विनोद कोचर	14
किशन पटनायक का लेखन	
जनतंत्र का भविष्य	15
सेकुलर आन्दोलन की गलतियां	17
गांधी और स्त्री	19
पुनरुत्थानवादी ताकतें कौन-सी हैं	21
प्रतिक्रान्ति और पत्रकारिता	24
पठन-पाठन/ कामू का नोबेल पुरस्कार समारोह में दिया गया वक्तव्य	27
'साझे का संसार' बहुजन समाज का संसार- कमलेश वर्मा	30
श्रद्धांजलि/ गोदावरी दत्त : अशोक कुमार सिन्हा	32
उच्च कोटि के विद्वान थे ए.जी. नूरानी- तीस्ता सीतलवाड़	34
पार्टी गतिविधियां/ डॉ. दिनेश पाल	36
कवि का पन्ना/ किशन पटनायक	40

सम्पादक

अरुण आनंद

सहयोग

कवि जी/ डॉ. दिनेश पाल/ साकिब अशरफी

जगदानन्द सिंह

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-01 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित

राजद समाचार की ईमेल आईडी

samacharrjd@gmail.com

'एक देश, एक चुनाव' भारत के संघीय ढांचे पर कुठाराघात

भाजपा हमेशा वही काम करती रही है जो इस देश के संघीय ढांचे और इसकी सामाजिक-राजनीतिक एवं सांस्कृतिक बहुलता को क्षतिग्रस्त करे। 'एक देश एक चुनाव' के द्वारा जो नैरेटिव खड़ा करने की कोशिश की जा रही है उसके पीछे भी मकसद यही है। अगर ऐसा करने में उन्हें कामयाबी मिल गई तो इस देश का संघीय स्वरूप लड़खड़ा जाएगा और लोकतंत्र की थोड़ी-बहुत उम्मीद जिन क्षेत्रीय पार्टियों की वजह से बची हुई है उनका भी पूरी तरह से सफाया हो जाएगा। भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा जारी इस प्रस्ताव की मंजूरी के बाद पक्ष और विपक्ष दोनों अपने-अपने तर्कों के साथ बहस में कूद पड़े हैं। इसके पक्षकार चुनाव खर्चे पर अंकुश लगाने, विकास कार्य में तेजी लाने, काले धन पर नकेल कसने और प्रशासनिक कार्यकलाप सुनिश्चित होने को मुख्य आधार बतला रहे हैं, लेकिन ये ऐसी ठोस दलीलें नहीं हैं जो 'एक देश एक चुनाव' अभियान को युक्तिसंगत ठहराये और उसे सर्वसम्मति प्रदान करे। इंडिया गठबंधन में शामिल लगभग सभी दलों ने एक स्वर से सरकार के इस प्रस्ताव का विरोध किया है। एनडीए के घटक रहे चंद्रबाबू नायडू ने भी पहले इसका विरोध किया, लेकिन बाद में उनका रुख बदल गया। भाजपा के हर विभाजनकारी एजेंडे के साथ रहे नीतीश कुमार ने इस बार भी कुर्सी के लिए वैचारिक आत्मसमर्पण कर दिया है।

हर वह नैरेटिव जो बहुलतापूर्ण भारतीयता को पलीते लगाता हो, यहां की सांस्कृतिक बहुलता की अवधारणा को खंडित करता हो, भाजपा को प्रिय रहा है। नागरिकता कानून की तरह ही 'एक देश एक चुनाव' के माध्यम से वह इसी बहुलता को चुनौती पेश करने के लिए मैदान में कूदी है। इसके पीछे उसका हिडेन एजेंडा एक देश एक भाषा, एक देश एक धर्म, एक देश एक कानून और एक देश एक पार्टी थोपने का है। यह भारत जैसे विविधतापूर्ण भाषाई, सांस्कृतिक और अलग-अलग अस्मिताओं और वैचारिक धाराओं से भरे-पूरे मुल्क के लिए मृत्यु वारंट लिखने